"Savitribai Phule (1831-1897) was perhaps the earliest visonary in India who had realised the importance of girl's education as a means of female empowerment. It was as early as in the first half of 19th century; she had started her first school in Pune (1847).

It was almost during the same time, in the first half of the 19th century, other visionaries and female emancipators had started the schools for girls in other parts of India: Narayana guru in Kerala and west coast, K. Veeresa Lingam, in Andhra region and East coast and Annie Besant (Madras) in Tamil Nadu had launched their efforts at female education then.

However, Savitribai Phule and her revolutionary husband Jyoti Rao Phule stand out as the earliest pioneers and visionaries in female education and empowerment.

Savitribai was so courageous, so radical and so marginalized women of Indian as early as 175 years ago! She was one of those pioneers of women's education, social and cultural renaissance, just before the dawn of the Indian independence movement and birth of the congress.

Hence the special appreciation of this subject and Motivation for the seminar."

**Prof. (Dr.) G. R. Krishnamurthy**
Founder Director and Chair Professor of Eminence,
A. J. Institute, Mangalore, India.

---

Anekant Education Society's

**Tuljaram Chaturchand College of Arts, Science & Commerce, Baramati**

Baramati 413 102, Dist. Pune, Maharashtra, Ind

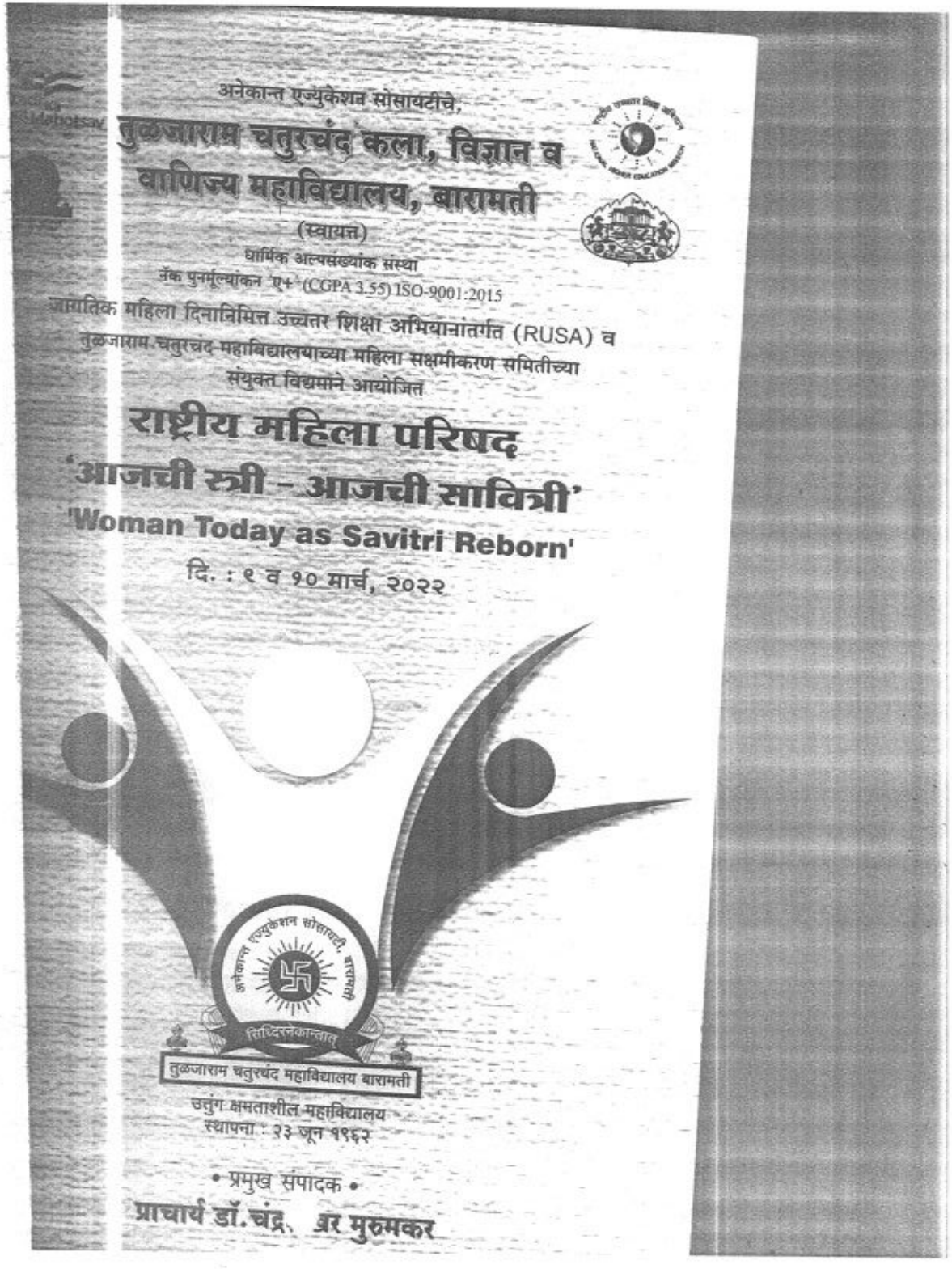

# • राष्ट्रीय महिला परिषद •

(संकलित लेख)

## 'आजची स्त्री-आजची सावित्री'

'Woman Today as Savitri Reborn'

प्रथम आवृत्ती : 'श्री भगवान महावीर जयंती' : १४ एप्रिल २०२२

ISBN No. : 978-93-5626-941-5

@तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय,बारामती

• संपादकाचे नाव •

प्राचार्य डॉ.चंद्रशेखर मुरुमकर

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय,बारामती

• कार्यकारी संपादक •

डॉ.सीमा-नाईक गोसावी

• मुखपृष्ठ व अक्षरजुळणी •

श्री.महेश शिंदे

यशवंत एंटरप्रायजेस, शॉप नं. ११, रामराजे शॉपिंग सेंटर, फलटण जि. सातारा. मोबाईल नंबर : ९४२०४८७०६०

• मुद्रक •

श्री.चंद्रकांत शिंदे

यशवंत ऑफसेट, नस्रोबानगर, अनंत मंगल कार्यालय जवळ, कोळकी ता. फलटण जि. सातारा. मो. ९४२२४००९५२

• प्रकाशकाचे नाव •

प्राचार्य डॉ.चंद्रशेखर मुरुमकर

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय,बारामती,

या पुस्तकातील व्यक्त झालेल्या सर्वच विचारांशी संपादक मंडळ सहमत असेलच असे नाही पुस्तकातील कोणत्याही भागाचे पुनर्निमाण अथवा वापर इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साध फोटोकॉपिंग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणुकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशव आणि संपादकाच्या, लेखकाच्या लेखी परवानगीशिवाय करता येणार नाही. सर्व हक्क महाविद्याल राखून ठेवले आहेत.



## शुभसंदेश...

राज्यमंत्री/सा.बां.,मृद व जलसंधारण,वने,
प.दु.म.,सा.प्र./कॅम्प इंदापूर/जनरल/199/2022

राज्यमंत्री
सार्वजनिक बांधकाम
(सार्वजनिक उपक्रम वगळून)
मृद व जलसंधारण, वने
पशुसंवर्धन, दुग्धव्यवसाय विकास व
मत्स्यव्यवसाय, सामान्य प्रशासन
महाराष्ट्र राज्य
मंत्रालय, मुंबई ४०० ०३२
www.maharashtra.gov.in

दिनांक : 04/03/2022

शुभसंदेश

अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटीच्या तुळजाराम चतुरचंद कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, बारामती हे महाविद्याल गेल्या 59 वर्षापासून ग्रामीण भागातील विदयार्थ्यांसाठी शैक्षणिक व सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्रात उल्लेखनीय काम करीत आहे.

अनेक यशाची शिखरे पादाक्रांत केलेले हे महाविद्यालय म्हणूनच उत्तुंग व क्षमताशील महाविद्यालय ठरले आहे.

सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ व राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान रुसा अंतर्गत महाविद्यायालयातर्फे महिला सक्षमीकरण समितीच्या वतीने आयोजित राष्ट्रीय महिला परिषद महत्वाच्या विषयावर विद्यार्थी संशोधकांचे लक्ष वेधीत आहे. या निमित्ताने स्त्रीयांच्या सक्सेस स्टोरीज समाजासमोर अधोरेखित व्हायला मदत होणार आहे आणि विदयार्थ्यांना यातून निश्चितच प्रेरणा मिळेल असा मला विश्वास वाटतो.

महाविद्यालयाचे प्राचार्य आणि सर्व अनेकान्त परिवाराचे मी अभिनंदन करतो.

दत्तात्रय भरणे

# हिंदी नाटको में देशभक्ती से प्रित नारी

डॉ.प्रतिभा आनंदराव जावळे
हिंदी विभाग,
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती
Email Id : pratibhajawale16@gmail.com
भ्रमणभाष : ९८६०२२८३२२

भारत एक ऐसा देश है जहाँ की सांस्कृतिक परंपरा महिलाओं को काफी ऊंचा स्थान प्रदान करती हैं । अपने त्याग एवं बलिदान के स्वभाव के कारण महिलाएं परिचित हैं । अपने पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए अपने साहस, त्याग, बलिदान से राष्ट्रीय आंदोलन में भी सक्रिय होती दिखाई देती हैं । अपनी देशभक्ती का परिचय उसने दिया ही है । प्रथमता राष्ट्रीय आंदोलन की गतिविधी को जानना महत्त्वपूर्ण हैं ।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम भारत के इतिहास में सबसे महत्त्वपूर्ण प्रगती में से एक हैं। स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक लोग शहीद हो गए । स्वतंत्रता आंदोलन से भारतीयों के दिल और दिमाग में देश प्रेम की भावना ओत-प्रेत दिखाई देती हैं । हिंदी साहित्य ने भारतीय लोगों के मन में देश प्रेम की भावना को अधिक जागृत किया । 'मेरा रंग दे बसंती चोला' 'अपनी आजादी को हम हरगीज मिटा सकते नहीं सर कटा सकते है लेकिन सर झुका सकते नहीं' आदी अनेक गीतों के कारण देशभक्ती देश प्रेम की भावना भारतीयों के मन में अभी भी जागृत होती हैं। एक तरफ सामाजिक बदलती गतिविधी और दूसरी तरफ देशभक्ती और राष्ट्रीयता की प्रखर अभिव्यक्ती अभिव्यक्त होती रही हैं । हिंदी के समस्त साहित्य ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं - ''इस समय का समाज परंपरागत साम-ती मूल्य और आधुनिक मूल्यों के टकराहट को मेहसूस करने लगा था । इस समय सचेत लेखकों ने इन दोनों वर्ग की अतिवादिता पर प्रहार किया है । एक और वे परंपरावादी समाज की धार्मिक रूढ़ीवादी अशिक्षा, कर्मकांड, विधवा विवाह, बालविवाह, अस्पृश्यता, बहुविवाह, आदी का तीव्र विरोध करते हैं तो दूसरी ओर अंग्रेजी सभ्यता के भष्टाचार, व्यभिचार, नारी विहार, पुलिस अत्याचार, शिक्षितों की बेकारी, फॅशन आदी सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्त करते हैं।''[1]

साहित्य में समाज की इन समस्याओं को चित्रित किया हैं । साथ ही भारतीयों के मन में जागृत देशभक्ती की भावना को बढावा दिया हैं । स्वतंत्रता के बाद महत्त्वपूर्ण जो घटना हो चुकी उसकी तरफ भी ध्यान देना आवश्यक है । उन घटनाओं में २६ जनवरी १९५० को भारतीय संविधान पारित हुआ । इस संविधान में जनता के अधिकार तथा एकात्मकता को प्रमुख स्थान दिया है । स्वतंत्र भारत को पहला सदमा पहुंचा अक्तूबर १९६२ में चीन ने भारत पर हमला किया और उसी वर्ष नवंबर में चीन ने दूसरा हमला किया । १९६५ में कश्मीर को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच जंग हुई । दुसरी जंग १९७१ में भारत और पाकिस्तान में हुई । बांग्लादेश का उदय और पाकिस्तान की हार इन घटनाओं के कारण फिर से भारतीयों के





मन में देशभक्ति की भावना जागृत हुई । इस देश भक्ति की भावना को ओर अधिकार प्रबल करने का काम साहित्य ने किया ।

पुरूषों ने स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया ही है साथ ही नारी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता । हम देखते है कि नारी के विकास का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जो अछूता रहा है । भारत में ही नहीं पूरे विश्व में नारी ने अपनी विजय पताका फहराई हैं । नारी के स्वतंत्रता और शिक्षा के कारण वह स्वयं अपने अधिकार और कर्तव्यों के प्रति जागरूक रही हैं। हम भारतीय है इसका अभिमान मन में रखते हुए हर भारतीय अपने देशाभिमान को बरकरार रखता है । साहित्य में इस देशभक्ति की भावना को बढावा दिया ।'' स्वातंत्रोत्तर कथालेखन स्त्री ने निज व्यक्तित्व विकास और विभिन्न आंदोलनों से नए तेवर अपनाता अधिक समृध्द होकर नई मुद्रा लेकर सामने आया है ।''[2]

कथा के साथ अनेक कवीयों के काव्य में देशभक्ति की भावना अधिक प्रभावी व्यक्त होती दिखाई देती है । काव्य के क्षेत्र में सुभद्राकुमारी चौहान के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता । उस समय सुभद्राकुमारीजी ने दोहरा दायित्व बखूबी निभाया है । एक और उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग दिया तो दूसरी और ओजस्वी एवं राष्ट्रीय चेतना से भरपूर कविता लिखी । आपकी 'झांसी की राणी', 'विरो का कैसा हो वसंत' आदी कविताओं से राष्ट्र के प्रति देशभक्ति की भावना जागृत होना स्वाभाविक है । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में देशभक्ती से प्रेरित नारी के कई रूप देखने को मिलते हैं । प्रथमतः देशभक्ति तथा देश प्रेम के संदर्भ में-अपने देश से प्रेम करना और सदा उसका कल्याण सोचना राष्ट्रभक्ती या देशभक्ती कहलाती है ।' स्वातंत्र्योत्तर नाटको में देशाभिमान का चित्रण कई नाटककारों ने किया दिखाई देता हैं । १९६२ में भारत और चीन के युध्द की पार्श्वभूमी में शिवप्रसाद सिंह द्वारा लिखित 'घाटियां गुंजती है' नाटक महत्त्वपूर्ण है । चीन का भारत पर आक्रमण इस नाटक का मूल विषय है। प्रस्तुत नाटक में क्यूला एक आदिवासी नारी हैं । जवान टूराँ की पत्नी है । उसे अपने पति पर गर्व है । वह समझती हैं कि उसका पति राष्ट्रभक्त है । राष्ट्र की सेवा करने के लिए गया है । क्युला का यह विश्वास एक दिन टूट जाता हैं । उसे मालूम होता है कि उसका पति चीनीयों से मिला है, गद्दार है । अपने पति की इस गद्दारी और धोकेबाजी क्युला बर्दाश्त नहीं कर पाती और उसमें ही वह पागल बन जाती है । ऐसे देशद्रोही पति के बच्चे की माँ बनना भी उसे स्वीकार नहीं है । अपने ससुर से कहती है, ''सब समझती हूँ । तुम इसलिए न रोते हो बापू की में एक देशद्रोही, धोकबाज के बच्चे की माँ होने वाली हूं । हा-हा-हा देशद्रोही की हा-हा-हा धोकेबाज था ।'[3] धोकेबाज था । और चिल्लाती हुई भागती है । क्यूला के मन को चोट पहुंचती है । पति की देश के प्रति गद्दारी उसे पागल कर देती है । सचमुच क्यूला कि यह देशभक्ति, देशाभिमान महान हैं। ज्ञानदेव अग्निहोत्री का 'नेफा की एक शाम' की शिकाकाई आदिवासी नारी है। चीनी आक्रमण के समय तवांग से भागकर आयी हुई वह अठराह वर्षीय युवती है, उसका मकसद हैं, चीनी सैनिको से बदला लेना । अपने पूरे परिवार का विनाश वह